P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

# हिन्दी उपन्यासों में साम्प्रदायिकता का सच

**अनिता प्रजापत**
सहायक आचार्य,
हिन्दी विभाग,
डॉ. भीमराव अम्बेडकर
राजकीय महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत

**सारांश**

स्वतंत्रता के पश्चात् के हिन्दी साहित्य में साम्प्रदायिकता की चर्चा निरन्तर होती रही है। देश–विभाजन के समय हुए व्यापक साम्प्रदायिक दंगों की छाया उपन्यासकारों के मस्तिष्क में लम्बे समय तक मँडराती रही, जिसकी अभिव्यक्ति अनेक उपन्यासों में हुई है। यशपाल के 'झूठा–सच', भीष्मसाहनी के 'तमस', कमलेश्वर के 'लौटे हुए मुसाफिर' तथा 'कितने पाकिस्तान' में विभाजन की त्रासदी और साम्प्रदायिक विद्वेष का व्यापक चित्रण हुआ है तथा जागरुक उपन्यासकारों ने इस समस्या के मूल तक पहुँचने का प्रयास किया है कि किस प्रकार धर्मान्ध और सत्तालोलुप ताकतों ने इस भीषण काण्ड के लिए जमीन तैयार की।

**मुख्य शब्द :** साम्प्रदायिकता, धर्मोन्माद, दंगें, विद्वेष, स्वार्थ, सत्ता, हिंसा।

**प्रस्तावना**

भारत अनेक धर्मो, जातियों और संस्कृतियों का देश है। यहाँ की बहुसंख्यक आबादी हिन्दुओं की है, उसके बाद मुसलमान है। ऐतिहासिक कारणों से हिन्दू और मुसलमान आरंभ से ही प्रायः टकराव की स्थिति में रहे हैं। सत्ताधारियों और सत्तालोभियों ने अपने लाभ के लिए इन्हें टकराव की स्थिति में ही रखना बेहतर समझा। 1947 में भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्ति मिली, साथ ही देश का बँटवारा हुआ और सम्पूर्ण उत्तर भारत साम्प्रदायिकता की आग में जल उठा। इन साम्प्रदायिक दंगों में हजारों व्यक्ति मौत के घाट उतारे गये, लाखों विस्थापित हो गये और पूरे देश की एक विशाल जनसंख्या को अपना वतन छोड़कर भारत या पाकिस्तान में नये सिरे से बसना पड़ा। यह एक अनहोनी और अमानवीय त्रासदी थी, जिसे अनेक उपन्यासकारों ने उपन्यास का विषय बनाया।

1857–58 के बाद से ही अंग्रेजों ने 'फूट डालो और राज करो' की चालें चलीं कि हिन्दू–मुस्लिम के बीच साम्प्रदायिक वैमनस्य की दीवारें निरन्तर ऊँची होती चली गई। स्वतंत्रता–आंदोलन के दौरान ऐसा समय भी आया कि फिर हिन्दू–मुस्लिम के बीच बहुत मजबूत भाईचारा दिखाई दिया, किन्तु फिर अंग्रेजों ने अपनी चालों से इन दोनों के बीच नफरत की ऊँची–ऊँची दीवारें खड़ी कर दी, जिसकी चरम परिणति देश का भारत और पाक दो राष्ट्रों के रूप में विभाजन था, किन्तु पाकिस्तान बन जाने मात्र से समस्या का स्थायी समाधान नहीं हुआ। आये दिन देश में साम्प्रदायिक हिंसा भड़कती रही है, विभिन्न स्थानों पर दंगे–फसाद होते रहे हैं। अभी भी जब–तब देश में कहीं न कहीं साम्प्रदायिक हिंसा की आग भड़क उठती है और हम फिर वहीं आकर खड़े हो जाते हैं। विभिन्न समयों पर हुए भारत–पाक युद्ध, आतंकी घटनाएँ, बाबरी–मस्जिद–प्रकरण, गुजरात में भीषण नरसंहार, दोनों देशों की सीमा पर निरन्तर चलती छेड़छाड़ आदि घटनाएँ– देश में साम्प्रदायिक भावनाओं को भड़काती रहती है। साहित्य में साम्प्रदायिक विद्वेष और साम्प्रदायिक ताकतों का पुरजोर विरोध हुआ है। हिन्दी उपन्यास ने एक ओर साम्प्रदायिकता का तीव्र प्रतिरोधी स्वर व्यक्त किया है तो दूसरी ओर इस भयानक समस्या के मूल में जाकर इसके वास्तविक कारणों, परिस्थितियों और उत्तरदायी शरारती तत्वों की पड़ताल करने की कोशिश की है। भीष्म साहनी 'तमस' में अंग्रेजों को इसका जिम्मेदार ठहराते हैं तो कमलेश्वर 'कितने पाकिस्तान' में इसका मूल मुगलकाल में औरंगजेब की सत्तालोलुपता में खोजते हैं।

यशपाल के 'झूठा–सच' उपन्यास में विभाजन और साम्प्रदायिकता की इस त्रासदी का बड़े पैमाने पर तथा बहुत ही सजीव चित्रण हुआ है। विभाजन की भयोत्पादक आशंका, मुस्लिम लीग और सिख नेताओं के भड़काऊ भाषणों और मुस्लिम समाज के आक्रामक तेवरों, दहशत की मानसिकता में घुटती जिन्दगी का यथार्थ और जीवन्त अंकन प्रस्तुत उपन्यास में हुआ है। साम्प्रदायिक

विद्वेष की आग में मानवीय संवेदनाएँ किस प्रकार मर जाती है, और आदमी जानवर बन जाता है, इसका सफलतापूर्वक बोध उपन्यासकार ने कराया है। तात्कालिक ही सही पर वहशी भावनाओं की गिरफ्त में आये हिंसक पशु बने मनुष्यों द्वारा साम्प्रदायिक दंगों में हजारों–हजार व्यक्ति मौत के घाट उतार डाले गये, लाखों विस्थापित हो गये, स्त्रियों और बच्चों के साथ अमानुषिक अत्याचार किये गये। ''साम्प्रदायिक दंगें, हिंसा और रक्तपात के भयानक झंझावात से समूचा देश आक्रान्त हो उठता है। पाकिस्तान में पड़ने वाले क्षेत्रों की हिन्दू जनता हिन्दुस्तान की ओर तथा हिन्दुस्तान में पड़ने वाले क्षेत्रों की मुस्लिम जनता पाकिस्तान की ओर भागना प्रारंभ कर देती है। समाज–विरोधी तत्व और धर्मान्धता से ग्रस्त हिन्दू और मुसलमान बलपूर्वक आम मुसलमानों और हिन्दुओं को अपने यहाँ से खदेड़ना प्रारम्भ कर देते हैं।''[1]

देश के विभाजन को मनुष्यता के इतिहास की एक महान् दुर्घटना एवं साम्राज्यवादी ताकतों की कूटनीति का दुष्परिणाम मानते हुए लेखक ने साफ शब्दों में कहा है कि देश के विभाजन के लिए यदि किसी को जिम्मेदार माना जा सकता है तो आम हिन्दू तथा मुसलमान न होकर कूटनीति में दक्ष साम्राज्यवादी शासक तथा उनके द्वारा पोषित सम्प्रदायवादी और स्वार्थी हिन्दू–मुसलमान नेता हैं, जिनके लिए देश का विभाजन ही उनके अपने स्वार्थ–साधन का एक उपाय था। उपन्यास के एक प्रमुख पात्र की टिप्पणी साम्प्रदायिक नेताओं पर लेखक के अपने विचारों का प्रतिनिधित्व करती है– ''मामा, जब तुमसे खुदा तुम्हारे कातिल का नाम पूछेगा तो तुम्हारी उँगली किसकी तरफ उठेगी? क्या खुदा नहीं जानता है कि तुम्हारे कत्ल के लिए उत्तेजना दिलाने की जिम्मेदारी उन नेताओं पर हैं जो तुम्हारे जैसे इंसानों को शासन के सिंहासन पर पहुँच सकने का जीना बनाने के लिए जनता का ईंट गारे की तरह प्रयोग करना चाहते हैं।''[2]

भीष्म साहनी के 'तमस' उपन्यास में स्वाधीनता प्राप्ति के पूर्व पंजाब में पैदा हुए साम्प्रदायिक तनाव और उससे जुड़ी क्रूरताओं का यथार्थ चित्रण हुआ है। उपन्यासकार ने साम्प्रदायिक उन्माद का जीवन्त वर्णन करने के साथ–साथ उन स्थितियों और कारणों के विश्लेषण तथा अंकन का अधिक प्रयत्न किया है जो देश के विभाजन और साम्प्रदायिकता के मूल में थे। उन्होंने इस बात पर विशेष बल दिया है कि साम्प्रदायिकता की आग फैलाने में ब्रिटिश शासन और उसके पिट्ठुओं का हाथ था, यह एक बनी–बनाई योजना का अंग था। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व पंजाब में हिन्दू–मुसलमान एक–साथ रहते थे और एक–दूसरे के सुख–दुख में बराबर हिस्सेदार थे। उन दोनों का एक लक्ष्य हिन्दुस्तान की आजादी था, जिसे अंग्रेज नहीं चाहते थे। इसलिए उन्होंने साम्प्रदायिकता का ऐसा माहौल पैदा कर दिया कि मुहल्ले का भाईचारा छोड़कर पड़ोसी दुश्मन में बदल गये और अंग्रेजी शासन से लड़ने के स्थान पर आपस में ही लड़ने लगे। उपन्यास के दो युवा पात्रों सोहनसिंह और मीरदाद के माध्यम से लेखक ने अंग्रेजों की इस कुचेष्टा को उजागर करने का प्रयास किया है। ये दोनों पात्र सिक्खों और मुसलमानों को समझाने का प्रयत्न करते हैं। सिक्खों को समझाते हुए सोहनसिंह कहता है– ''हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम लोगों को मुसलमानों के खिलाफ भड़काया जा रहा है और मुसलमानों को हमारे खिलाफ भड़काया जा रहा है। हम झूठी अफवाहें सुन–सुनकर एक–दूसरे के खिलाफ तैश में आ रहे हैं।''[3] दूसरी ओर मीरदाद मुसलमानों को समझाते हुए बताता है कि यह सब अंग्रेजों की शरारत है तथा इसके पीछे निहित मन्तव्य को स्पष्ट करते हुए वह कहता है– ''अगर हिन्दू–मुसलमान–सिख मिल जाते हैं, उनमें इत्तहाद हो जाता है, तो अंग्रेज की हालत कमजोर पड़ जाती है। अगर हम आपस में लड़ते हैं तो हालत मजबूत बनी रहती है।''[4] उपन्यास में साम्प्रदायिक दंगों की शुरूआत अंग्रेज अफसरशाही के इशारे पर म्युनिसिपल कमेटी के कारिन्दे मुराद अली द्वारा सीधे–सादे पर मजबूर नत्थू द्वारा सुअर मरवाकर मस्जिद की सीढ़ियों पर डलवा देने की घटना से होती है। आशंका, क्रोध, भय और धर्मोन्माद पर आधारित हिंसा भयंकर रूप धारण कर लेती है। इसका शिकार होते हैं सीधे–सादे लोग, गरीब लोग, आम जनता। हरनाम सिंह अपनी बीवी के साथ दंगाइयों के भय से सिर छुपाने की जगह ढूँढता फिरता है, इकबाल सिंह को जबरदस्ती शेख इकबाल मोहम्मद बना दिया जाता है। सैयदपुर में सिक्खों–मुसलमानों में जमकर लड़ाई होती है। अधिकांश पुरुष मारे जाते हैं, औरतें बच्चों सहित कुँए में डूबकर मर जाती है। इत्र फरोश युवा क्रांतिकारी इन्द्र का शिकार बनता है। सनकी देशभक्त जरनैल मारा जाता है, नत्थू मारा जाता है। उपन्यासकार का मानना है कि आजादी पूर्व अंग्रेजों का राज था, फौज उनके हाथ में थी। वे चाहते तो हिन्दू–मुस्लिम दंगे होते ही नहीं, लेकिन वे तो जानबूझकर इन दोनों जातियों में द्वेष, वैमनस्य, नफरत पैदा करते हैं। एक पात्र कहता है– ''इन फिसादों के लिए जिम्मेदार कौन है? सरकार उस वक्त कहाँ थी, जब शहर में तनाव बढ़ रहा था, अब कर्फ्यू लगाया गया है, उस वक्त क्यों नहीं लगाया गया?''[5] अंग्रेजी सत्ता दंगे, लूटपाट, विद्वेष, नफरत आदि फैलाकर जब पूरी तरह ऐसा वातावरण बनाने में कामयाब हो जाती है कि बरसों से चला आ रहा भाईचारा, अमन अब कभी पुनः स्थापित नहीं हो पायेगा तो शीघ्र ही दंगों को नियंत्रित कर लिया जाता है। इस बारे में एक पात्र कहता हैं– ''अब हिन्दुओं के मुहल्ले में न तो कोई मुसलमान रहेगा और न मुसलमानों के मुहल्ले में कोई हिन्दू। इसे पत्थर पर लकीर समझो। पाकिस्तान बने या न बने, अब मुहल्ले अलग–अलग होंगे, साफ बात है।''[6]

कमलेश्वर ने 'लौटे हुए मुसाफिर' तथा 'कितने पाकिस्तान' में साम्प्रदायिक हिंसा के अमानवीय पक्षों का अंकन तथा उसके मूल में निहित कारणों की खोज का प्रयास किया है। 'लौटे हुए मुसाफिर' में कमलेश्वर ने तत्कालीन राजनैतिक परिवेश का चित्रण करते हुए स्वतंत्रता आंदोलन, भारत–पाक के बंटवारे की भीषणता, साम्प्रदायिक दंगों के यथार्थ का अंकन किया है। भारत विभाजन के पूर्व हिन्दू–मुस्लिम तनाव, मुस्लिम लीग और हिन्दू–महासभा के द्वारा हिन्दू–मुसलमानों में नफरत की आग भड़काना, बस्ती का उजड़ना आदि का वास्तविक

चित्रण उपन्यास में हुआ है। उपन्यास के केन्द्र–बिन्दु–चिकवों की बस्ती में हिन्दू और मुसलमान एक–दूसरे के सुख–दुख में शामिल होते हुए साथ–साथ रहते हैं। धर्म अलग–अलग थे, पर आम जिन्दगी में धर्म का कोई बेजा दखल न था। हिन्दू और मुसलमान एक–दूसरे के सामाजिक और धार्मिक समारोहों में प्रेम के साथ शामिल होते थे। ''जब हिन्दुओं की बस्ती से ताजिये गुजरते थे, तो उन पर लोग गुलाब–जल छिड़कते थे और हिन्दू औरतें अपने बच्चों को गोदी में उठाकर ताजियों के नीचे से गुजरती थी .... जब रामलीला का विमान उठता था, तो मुसलमान औरतें दरवाजों की चिकें या बोरों के पर्दे उलटकर मूर्तियों के श्रृंगार की तारीफ करती थी...''[7] स्वार्थी तत्वों द्वारा फैलाये गये धार्मिक विद्वेष, नफरत के कारण हिन्दू और मुसलमानों में भीतर–भीतर भूचाल आने लगता है। ''अलीगढ़ का सियासी कारकुन कह रहा था – ''तो बात जंग की नहीं है। इस वक्त हमें उन भीतरी बातों को समझना है जो जिन्ना साहब कह रहे हैं। आप हिन्दुओं की चालों को नहीं समझते। हिन्दू कौम कभी हमारे साथ नहीं हो सकती। हमने हिन्दुस्तान पर सदियों हुकूमत की है। आजादी के बाद उसी का बदला वे मुसलमान कौम से लेंगे, यह बिल्कुल तय है।...''[8] इस प्रकार की अफवाहों, कुचालों के कारण हिन्दू–मुसलमानों में भाइचारे की भावना सिमटकर समाप्त–सी होने लगती है। दोनों जातियों में अपने हिन्दू और मुसलमान होने का अहसास बढ़ता जाता है। हिन्दू शायद अपने को एकाएक ज्यादा हिन्दू समझने लगते हैं और मुसलमान अपने को ज्यादा मुसलमान। ''अब मंदिरों में बिला नागा शाम को आरती होती थी और घण्टे–घड़ियालों का शोर देर–देर तक शाम के धुंधलके में ठहरा रहता था... उनकी गूँज दूर–दूर तक सुनाई पड़ती थी। गलियों के पुजारियों के खड़ाउँओं की आवाज अब बहुत साफ–साफ सुनाई पड़ती थी।... मस्जिदों के मोअज्जन भी अब गला खोलकर अजान देते थे और मस्जिदों की नमाज में शामिल होने वालों की तादाद बढ़ गई थी। इसी समय शहर में मुसलमान फकीरों और हिन्दू साधुओं की बाढ़ भी आई थी।''[9]

कमलेश्वर इस सत्य को उजागर करते हैं कि धार्मिक कट्टरता वास्तव में राजनैतिक–आर्थिक–स्वार्थो– महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए फैलायी गई नफरत की आग है जिसने समय–समय पर पूरे देश, विश्व को जलाया है। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में लेखक ने बाबर से लेकर ब्रिटिश काल तक, भारत–विभाजन तक, विभिन्न साक्ष्यों को प्रस्तुत करते हुए बताया है कि कोई भी शासक धार्मिक उद्देश्यों से प्रेरित नहीं था। किसी भी आक्रमणकारी का लक्ष्य धर्म का प्रचार नहीं था। एक पात्र के माध्यम से कमलेश्वर कहते हैं– ''वक्त पड़ने पर या अपनी जरूरत के मुताबिक अपना निजी दबदबा या प्रभुत्व बढ़ाने के लिए बहुतों ने इस्लाम का सहारा लिया। इस्लाम का शोषण सदियों किया गया और आज भी जारी है। पैगम्बर हजरत मुहम्मद के दौर में जो तलवार इंसाफ और हिफाजत के लिए उठाई गई थी, उसका गलत इस्तेमाल किया गया, बाद में वह तलवार प्रतिशोध और निजी स्वार्थ के लिए उठाई जाने लगी... और उसे इस्लाम परस्ती का नाम दिया गया।''[10]

प्रतिशोध और निजी स्वार्थ के लिए शासकों, राजनेताओं, धार्मिक नेताओं द्वारा धार्मिक उन्माद का वातावरण पैदा किया जाता है। नफरत का जहर हिन्दू को ज्यादा बड़ा हिन्दू और मुसलमान को ज्यादा बड़ा मुसलमान बनाता है। 'कितने पाकिस्तान' में एक त्रिशूलधारी कहता है– ''जब नफरत का जहर मेरी नसों में दौड़ता है, तब मैं इंसान का चोला उतार कर हिंदू बन जाता हूँ।''[11] नेता, मुल्ला–मौलवी, शासक, साधु–सन्यासी आदि समय–समय पर आम जनता की धार्मिक भावनाओं को भड़काकर अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। साधारण जनता इनके बहकावे में आकर एक दूसरे के खून की प्यासी बन जाती है। मध्यकाल में औरंगजेब ने सत्ता हासिल करने के लिए धर्म का सहारा लिया। उत्तराधिकार युद्ध को धार्मिक युद्ध बताते हुए मुल्ला–मौलवियों, जनता को अपने पक्ष में करने का प्रयास किया। 'कितने पाकिस्तान' में एक पात्र कहता है– ''औरंगजेब ने धर्म को तलवार बनाया था। दाराशिकोह को मारने के बाद वह कुंठाग्रस्त हो गया था... उसकी इसी कुंठा का नतीजा था कि इसने भारत में रच–बस गये मुसलमानों को मानसिक रूप से विस्थापित बना दिया था। वही मानसिक विस्थापन लगभग दो सदियों के बाद विभाजन का कारण बना।''[12] अतिरिक्त स्वार्थ, सुख, अतिरिक्त धार्मिकता, अतिरिक्त सत्ता की हवस ने व्यक्ति को बर्बर और असहनशील बनाया है। नही तो, सभी धर्मों के मूल तत्व तो आपसी प्रेम, भाईचारा, दया, करुणा, एकेश्वर की तरफ ही इशारा करते हैं। धर्मान्धता ने, धार्मिक विद्वेष ने राष्ट्र के तो टुकड़े किये ही, विश्व स्तर पर हत्यारे बर्बर और आतंकवादी उत्पन्न किये हैं। साम्राज्यवादी, भौतिकवादी शक्तियों ने धर्म का मुखौटा लगाकर विश्व में लूट मचाई, अपनी भौतिक हवस को पूरा किया। 'कितने पाकिस्तान' में अर्दली कहता है– ''योरूप के सारे देश– स्पेन, पुर्तगाल, हॉलैण्ड, इंग्लैण्ड, फ्रांस सत्ता–लोलुपता, भौतिक–सुख और मुनाफे की तलाश में हिंसक धर्मयुद्धों को जन्म देते रहे हैं.. . धर्म को इन्होंने सत्ता का हथियार बनाया है।''[13]

**अध्ययन का उद्देश्य**

साम्प्रदायिक संदर्भ को लेकर लिखे गए उपन्यासों का गहन विश्लेषण कर, महान साहित्यिक चिन्तकों के विचारों का अध्ययन कर, हिन्दू–मुस्लिम तनाव, भारत–पाकिस्तान तनाव, जो कि आज भी ज्वलंत समस्या है, के मूल में निहित उत्तरदायी तत्वों के संबंध में निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास ही इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

**निष्कर्ष**

इस प्रकार जीवन व जगत के प्रति सचेत उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में साम्प्रदायिकता के कारणों की तलाश करने की कोशिश की है। झूठा–सच, तमस, लौटे हुए मुसाफिर, कितने पाकिस्तान में उन्होंने बताया है कि किस प्रकार धर्मोन्माद सीधे–सादे लोगों के मन में भरा जाता है और आशंका, अविश्वास, आतंक, भय पैदा कर उसे जुनून में बदल दिया जाता है। 'कितने पाकिस्तान' में 'पाकिस्तान' को नफरत और धर्मान्धता की नींव पर आधारित मुल्क का प्रतीक बताते हुए कमलेश्वर ने कहा है कि पाकिस्तान से पाकिस्तान पैदा होता है। यह

छूत का एक रोग है। जब तक धर्म, नस्ल, जाति और दुनिया की पहली शक्ति बनने का नशा नहीं टूटता, जब तक सत्ता और वर्चस्व की हवस नहीं टूटती, तब तक इस धरती पर पाकिस्तान बनाए जाने की नृशंस परम्परा जारी रहेगी। लेखक स्पष्ट करना चाहते हैं कि पाकिस्तान के निर्माण के लिए अथवा साम्प्रदायिक विद्वेष के लिए आम जनता कहीं भी मूल में नहीं है। साम्राज्यवादी शक्तियाँ, स्वार्थी नेता तथा सत्ता और वर्चस्व की हवस ही उनके मूल में है। जनता को तो हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। आम जनता इन स्वार्थी शक्तियों की कुचेष्टाओं का शिकार होकर धार्मिक भावनाओं के सैलाब में बह जाती है और अपना तथा अपने जैसे ही अन्य साधारण लोगों का नुकसान कर बैठती है।

**अंत टिप्पणी**

1. *मिश्र प्रकाशचन्द्र, सं. 1978, यशपाल का कथा साहित्य, दि मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड दिल्ली, पृ. सं. 87*
2. *यशपाल, झूठा–सच–भाग–1 पृ. 122*
3. *साहनी भीष्म, सं. 2015, तमस, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 214–215*
4. *वही, पृष्ठ 217*
5. *वही, पृष्ठ 272*
6. *वही, पृष्ठ 300*
7. *कमलेश्वर, सं. 2011, समग्र उपन्यास– लौटे हुए मुसाफिर, राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली, पृष्ठ 89*
8. *वही, पृष्ठ 103*
9. *वही, पृष्ठ 127–128*
10. *कमलेश्वर, सं. 2010, कितने पाकिस्तान, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, पृष्ठ 172*
11. *वही, पृष्ठ 69*
12. *वही, पृष्ठ 260*
13. *वही, पृष्ठ 294*